जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 | वर्षः 51 | संख्याः 26 | प्रभात | कोटा, रविवार, 9 नवम्बर, 2025 | कोटा/24/2012-14 | पृष्ठ 8 | मूल्य 2.50 रु.

भला लगे या बुरा, राष्ट्रीय गान अपूर्ण है, अगर उसके पहले दो छंद ही गाये जाते हैं

अगर तुम्हें पसंद है तो गाओ, नहीं पसंद है तो मत गाओ, क्योंकि उसके साथ छेड़छाड़ करने से गान की भावना व बंकिम चंद्र के साथ खिलवाड़ है

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 नवम्बर। अगर यह राष्ट्रीय गान आप नहीं गाना चाहते तो मत गाइए, पर इसके साथ काटपीट मत करिए। राष्ट्र की भलाई और साहित्य की भलाई इसी में है कि इसकी भावना नष्ट मत करिए।

वंदे मातरम् आज फिर से राष्ट्रीय बहस का विषय बन गया है। शायद यह सही समय है कि हम उन दिनों को याद करें, जब महान साहित्यकार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय अपनी साहित्यिक रचनाएं लिख रहे थे।

बंकिमचंद्र उस समय भारत सरकार में डिप्टी मजिस्ट्रेट थे। इस पद के कारण, वे अंग्रेज अधिकारियों और प्रमुख हिंदू नेताओं दोनों के संपर्क में रहते थे।

एक दिन जब बंकिम चंद्र दफ्तर से घर लौट रहे थे, तो रास्ते में एक मैदान से होकर अपने गुजर रहे थे। उनके पालकी वाले उन्हें लेकर जिस मैदान से गुजर रहे थे, वहाँ कुछ अंग्रेज क्रिकेट खेल रहे थे। अंग्रेज यह देखकर नाराज़ हुए कि कोई उनकी क्रिकेट फील्ड से गुजर रहा है। उन्होंने पहले पालकी-वाहकों को पीटा और फिर बंकिम चंद्र पर भी हमला किया। इस पर बंकिम चंद्र नाराज़ हुए और छावनी अधिकारियों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई।

इतना अपमानित होने पर बंकिम चंद्र ने अंग्रेज़ों के खिलाफ अपराधिक शिकायत दर्ज कराई। समय के साथ मामला ऊपर की अदालत तक गया और आखिरकार उन अंग्रेजों को खुले कोर्ट में बंकिम चंद्र से माफी मांगनी पड़ी। बंकिम ने उदारता दिखाते हुए शिकायत वापस ले ली।

लेकिन यह बात अंग्रेजों को बहुत नागवार गुज़री कि उन्हें एक देशी से माफी मांगनी पड़ी। उन्होंने बदला लेने की साजिश रची। अपराधियों, जो स्थानीय छावनी सदस्य थे, ने बंकिम को खत्म करने की योजना बनाई। एक राजा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- बंकिम चंद्र अंग्रेज सरकार में डिप्टी मजिस्ट्रेट थे, वो एक बार अपनी पालकी में ऑफिस से घर लौट रहे थे तो एक खाली मैदान पार करके जाना चाह रहे थे, जहाँ अंग्रेज अफसर कभी-कभी क्रिकेट खेलते थे।
- कुछ अंग्रेज अफसरों ने उनकी इस हिमाकत को अपना अपमान समझा और उनके पालकी वाहकों व उनके साथ मारपीट की।
- बंकिम चंद्र ने इसकी ऑफिशियल शिकायत की और न्यायालय ने उनके पक्ष में फैसला दिया और अंग्रेज अफसरों को माफी मांगनी पड़ी।
- कंटूनमेंट के अफसरों को एक देसी व्यक्ति से माफी मांगना नागवार गुज़रा और उन्होंने बंकिम चंद्र को खत्म करने की योजना बना ली।
- स्थानीय ज़मींदार (राजा) के कानों में यह बात पहुँची और उन्होंने बंकिम चंद्र को आगाह किया और महल से सटे जंगल में एक मकान दिया रहने का और सुरक्षा भी दी। बंकिम चंद्र को जंगलों में घूमते-घूमते कई मंदिर मिले, काली, सरस्वती गणेश और कार्तिकेय की जर्जर हालत में प्रतिमाएं मिलीं, जिन्हें देखकर कवि हृदय ने भारत के भविष्य की परिकल्पना की और अपने पाक्षिक बंगदर्शन में छापी।
- जब भी उनके गीत की आलोचना हुई, उन्होंने उसे बदलने से इन्कार कर दिया और गान का जोशीला डिफेंस किया।

मोदी ने अडवानी को जन्मदिन की बधाई दी

नयी दिल्ली, 8 नवंबर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार शाम को राजधानी में भारतीय जनता पार्टी के वयोवृद्ध नेता और पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी के घर जा कर मुलाकात की और उन्हें जन्म दिन की बधाई दी।

मोदी ने इस मुलाकात की फोटो सहित जानकारी सोशल मीडिया मंच एक्स पर साझा की। प्रधानमंत्री ने एक्स पर लिखा , उन्होंने (आडवाणी ने) देश की महती अविस्मरणीय सेवा की है और उनसे हम सभी को बड़ी प्रेरणा मिली है। आडवाणी की आज 98वीं वर्षगांठ है।

उनका जन्म 08 नवंबर 1927 को अविभाजित भारत के कराची शहर में हुआ था।

- अडवानी की 98 वीं वर्ष गांठ पर बधाई देने प्रधानमंत्री उनके घर गये।

दिल्ली पुनः प्रदूषण से गैस चेंबर बना

आश्चर्यजनक तो है, पर सच है कि भारत अब चीन से दिल्ली में प्रदूषण नियंत्रण के लिए मदद मांग रहा है

- डेढ़ दशक पहले चीन, दिल्ली के कटु अनुभव को झेल चुका है।
- कुछ सख्ती से कुछ प्लानिंग से और काफी पैसा खर्च करके चीन ने प्रदूषण के खिलाफ युद्ध जीता है।
- उदाहरण के लिए, चीन का जंगलात पर खर्चा अंतर्राष्ट्रीय औसत से तिगुना है और अब चीन, प्रति हेक्टेयर, अमेरिका और यूरोप से इस मद में ज्यादा खर्च कर रहा है।
- इसका नतीजा यह हुआ है कि अब बीजिंग में पहले की तुलना में 100 दिन अतिरिक्त स्वच्छ आसमान दिखता है, न्यूयॉर्क टॉइम्स के अनुसार।

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 नवम्बर। दिल्ली और एनसीआर में वायु गुणवत्ता सूचकांक (ए.क्यू.आई.) लगातार बिगड़ने के कारण जब पूरा इलाका "गैस चैम्बर" जैसा हो गया है, तो हालात सुधारने की पेशकश एक अप्रत्याशित जगह, चीन से आई है।

दीवाली के बाद से राजधानी की वायु गुणवत्ता लगातार "खराब", "बहुत खराब" और "गंभीर" श्रेणी में बनी हुई है। शनिवार को दर्ज किया गया ए.क्यू.आई. स्तर 335 रहा, जिसे "बहुत खराब" माना जाता है। दिल्ली में हर साल की तरह इस बार भी प्रदूषण के बढ़ने की वजह, स्थानीय और सीमावर्ती, दोनों तरह के कारण हैं, जिनमें वाहनों से निकलने वाला धुआँ, औद्योगिक प्रदूषण, निर्माण कार्यों की धूल और पड़ोसी राज्यों में कचरा व पराली जलाने जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं। ग्लोबल बर्डन ऑफ डिज़ीज़ के आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2023 में दिल्ली में हुई कुल मौतों में से लगभग 15 प्रतिशत मौतें वायु प्रदूषण से जुड़ी थीं।

चीन, जो करीब डेढ़ दशक पहले इसी तरह के प्रदूषण संकट से जूझा था, ने अब भारत को मदद की पेशकश की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पेंशन परिलाभ में देरी पर ब्याज क्यों नहीं दिया

जयपुर, 8 नवंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने उपवन संरक्षक, वन विभाग भरतपुर के अधीन रहे रिटायर फॉरेस्टर को पेंशन परिलाभ देने में हुई देरी पर ब्याज राशि नहीं देने पर प्रमुख वन सचिव, प्रमुख मुख्य वन संरक्षक जयपुर, उपवन संरक्षक भरतपुर और पेंशन निदेशक से जवाब मांगा है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या भाजपा का सवर्ण वोट बैंक खिसक रहा है

अब तक सीमांचल, मिथिलांचल व चंपारण में सवर्ण भाजपा का मजबूत आधार रहा है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 नवंबर। बिहार में मंगलवार (11 नवम्बर) को विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण के मतदान से पहले सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) अपने पारंपरिक गढ़ों में अप्रत्याशित मुश्किलों का सामना करती दिख रही है।

सीमांचल, मिथिलांचल और चंपारण के 122 विधानसभा क्षेत्रों में मतदान होना है। ज़मीनी रिपोर्टों के अनुसार, भाजपा अपने परंपरागत ऊंची जातियों के वोट बैंक पर पकड़ खोती नज़र आ रही है, जबकि उसके छोटे-छोटे रणनैतिक दांव भी अपेक्षित नतीजे नहीं दे पाए हैं।

पार्टी के शीर्ष रणनीतिकारों के करीबी सूत्रों के मुताबिक, भाजपा के अंदरूनी आकलन में ऊंची जातियों के समर्थन में गिरावट दर्ज की गई है। यह वर्ग लम्बे समय तक बिहार में पार्टी की चुनावी सफलता की रीढ़ माना जाता रहा है। पार्टी के सूत्र निजी तौर पर यह स्वीकार कर रहे हैं कि इसका कारण मतदाता की ऊब, स्थानीय असंतोष और यह धारणा है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के जनता दल (यूनाइटेड) के साथ गठबंधन से अपेक्षित सहयोग एवं लाभ नहीं मिला।

इस बार उम्मीद थी कि असदुद्दीन ओवैसी की ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) अल्पसंख्यक बहुल इलाकों में विपक्षी वोटों को बांटकर उसको फायदा पहुँचायेगी।

लेकिन ज़मीनी फीडबैक से पता चलता है कि ओवैसी की पार्टी के 25 से अधिक सीटों पर उतारे गए उम्मीदवार इस बार कोई खास असर नहीं डाल पा रहे हैं। रिपोर्टों के अनुसार, मुस्लिम मतदाता इस बार हर क्षेत्र में रणनीतिक रूप से सबसे मज़बूत गैर-बीजेपी उम्मीदवार के पक्ष में एकजुट होकर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- चुनाव विशेषज्ञों का मानना है कि वोटर फटीग, स्थानीय स्तर पर असंतोष व नीतीश कुमार के साथ गठबंधन में उत्साह नहीं जगने के कारण भाजपा को नुकसान हो सकता है।

मुख्यमंत्री भजनलाल आज अंता में रोड शो करेंगे

अंता/जयपुर । राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा कल अंता विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी मोरपाल सुमन के समर्थन में दोपहर 12 बजे भव्य रोड शो करेंगे। इस अवसर पर उनके साथ राज्य की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़, उप मुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा सांसद दुष्यंत सिंह एवं भाजपा प्रत्याशी मोरपाल सुमन ज़िला अध्यक्ष नरेश सिकरवाल भी विशेष रथ पर सवार रहेंगे।

रोड शो की शुरुआत अंता क्षेत्र के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- वसुंधरा राजे, मदन राठौड़, प्रेमचंद बैरवा, दुष्यंत सिंह व प्रत्याशी भी रथ पर साथ रहेंगे।

जीएसटी कम होने के बावजूद "फूड प्राइसिस" लगातार क्यों बढ़ रही हैं

यह कोई अबूझ पहेली नहीं है, खाने पीने के सामान की कीमतें स्थानीय परिस्थितियां निर्धारित करती हैं, जिसमें जीएसटी एक बड़ा कारण है, पर, निर्णायक कारण नहीं

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 8 नवम्बर। ज़रूरी खाद्य वस्तुओं पर हाल ही में की गई जीएसटी दरों में कटौती से उपभोक्ताओं को राहत मिलने की उम्मीद थी, लेकिन नतीजा उल्टा निकला। रसोई में इस्तेमाल होने वाली चीज़ें, जैसे सरसों का तेल, चीनी और आटा सस्ती होने के बजाय और महंगी होती जा रही हैं। इस विरोधाभास ने लोगों को हैरान कर दिया है कि जब टैक्स घटा है तो दाम क्यों नहीं घटे। इसकी असल वजह बाज़ार की उन ताकतों में छिपी है, जिन्होंने टैक्स राहत का असर पूरी तरह बेअसर कर दिया, वैश्विक आपूर्ति बाधाएं, घरेलू उत्पादन में अस्थिरता, बढ़ती लागतें और खुदरा स्तर पर कीमतें नीचे न आने की प्रवृत्ति, इन सबने मिलकर दामों को ऊँचा बनाए रखा है।

उदाहरण के तौर पर, सरसों के तेल को ही लीजिए, जिसकी कीमत को अक्सर घरेलू महंगाई का सूचक माना जाता है। यह तेल ज्यादातर भारत में ही बनता है, फिर भी पिछले कुछ महीनों में इसकी खुदरा कीमत तेज़ी से बढ़ी है। इसकी प्रमुख वजह टैक्स नहीं, बल्कि सरसों की कम आपूर्ति है। राजस्थान और मध्य प्रदेश जैसे प्रमुख उत्पादन वाले राज्यों में अनियमित बारिश के कारण पैदावार घट गई। तेल मिलों को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- सरसों की फसल भारी वर्षा के कारण राजस्थान और मध्य प्रदेश में, जहाँ सबसे ज्यादा सरसों होती है, इस बार खराब हुई और सरसों के तेल की कीमत काफी ऊपर चढ़ी।
- चीनी के दाम भी बढ़े हैं, क्योंकि गन्ने का एक उत्पाद, मोलैसिस पेट्रोल में मिला कर बेचा जाता है, जिसे सरकार भी प्रोत्साहन दे रही है। इसकी मांग बढ़ने से चीनी के भाव भी बढ़े हैं।
- अधिकतर सरकार ने एमएसपी के तहत बहुत गेहूँ व खाद्यान्न लेवी के रुप में खरीदे। अतः मिल मालिकों को गेहूँ पर्याप्त नहीं मिल रहा है, इसलिये आटे के भाव भी बढ़ रहे हैं।